National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-05-2020; Accepted: 10-06-2020; Published: 26-06-2020
www.nationaljournals.com
Volume 5; Issue 2; 2020; Page No. 30-32

उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं के पारिवारिक वातावरण एवं अनुषासन का उनके भावी–जीवन पर प्रभाव का अध्ययन

मंजू शर्मा [1], आसमा खातून [2]
[1] शोध निर्देशिका, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत
[2] शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
बदलते परिवेश के इस वातावरण में अधिकांश परिवार अब इस बात को समझने लगे हैं कि बालिकाओं को पराश्रित नहीं छोड़ा जा सकता, उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने में भरसक प्रयास करना ही होगा, क्योंकि बालक की प्रथम पाठशाला उसके 'परिवार' को ही माना जाता है। जहाँ वह अपने परिजनों की छाया में बैठकर अपनी सुसुप्त क्षमता व प्रतिभा को उजागर करता है। शिशु को पहली बार माँ के दुलार और पिता के स्नेह का आभास उनकी गोद में ही हो जाता है। अतः उसके परिजनों को अपने कार्य व्यवहार से बालक का उचित पोषण करना आवश्यक हो जाता है, जिससे वह उत्तम भविष्य के सोपानों पर अग्रसर हो सके। परिवार में रहकर जहाँ बालक कर्त्तव्य पालन का पाठ सीखता है वहीं उसके नैतिक गुणों का भी विकास होता है। आज का बालक कल का नागरिक होता है। अतः उसके भावी–जीवन को उत्तम कोटि का बनाने में सहयोग की वृत्ति, सहिष्णुता, नैतिकता, उदारता, सदाशयता, अनुशासन, निष्ठा तथा सम्मान भावना और अन्य मानवीय मूल्यों को जीवन का आधार बनाने की आवश्यकता है और इन सारे संस्कारों का आविर्भाव उसके पारिवारिक मृदु वातावरण एवं संयमित अनुशासन से ही सम्भव है, तभी उसका भावी जीवन सुखद और सफल हो सकेगा।

मुख्य शब्दः पारिवारिक वातावरण, अनुशासन–दमनात्मक प्रभावात्मक और मुक्त्यात्मक

प्रस्तावना

किसी भी व्यक्ति के परिवेश अथवा अनुशासन का प्रभाव उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व पर पड़ता है। शिशु के जन्म से ही उसकी शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है, जब वह पहली बार आँखें खोलता है तब वह अपने परिवेश को पहचानने का प्रयास करता है। उसके चारों ओर का वातावरण विशेषकर उसका परिवार ही उसकी प्रथम पाठशाला होती है तथा उसकी माँ उसकी प्रथम शिक्षिका। यहीं से वह न केवल अपने वातावरण से अनुकूलन करने में समर्थ होता है वरन् वातावरण और प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता है। इस समय वह पशुवत् आचरण करता है और अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। धीरे–धीरे वह अपनी मौलिक जिज्ञासावश सीखने की प्रक्रिया से गुजरना प्रारम्भ करने लगता है। परिवार का वातावरण और उसकी माँ शिशु की इन प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन करके उसे परिपक्वता की ओर बढ़ने की भाव–भूमि तैयार करती है, उसके व्यवहार को, उसके आचरण को, उसके क्रियाकलापों को उचित और समाजोपयोगी बनाने की ओर अग्रसित करती है किन्तु केवल परिवार के माध्यम से उसमें अपेक्षित रचनात्मक शक्ति का विकास नहीं हो पाता। वह मात्र जीने की कला का प्रशिक्षु बनकर नहीं रह सकता बल्कि उसे सशक्त और प्रभावशाली ढंग से जीवन–समर के संघर्षो में विजय पाने के लिए विशिष्ट प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है। वह जैसे–जैसे बड़ा होता जाता है उसकी जिज्ञासाएँ बढ़ती जाती हैं जिन्हें शान्त करने के लिए उसकी पारिवारिक पाठशाला अक्षम सिद्ध होती जाती है इसलिए उसे अपने अनौपचारिक शिक्षा के कुएँ से निकलकर औपचारिक शिक्षा–सागर में छलांग लगाने की आवश्यकता होती है और फिर एक सुव्यवस्थित शिक्षा–प्रक्रिया का शुभारंभ होता है, जो उसे असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर जाने के लिए प्रेरित करती है, प्रोत्साहित करती है और निर्देशित करती है। आगे चलकर यही शिक्षा उसके जीवन में उदात्ता, उच्चता, उत्कृष्टता और पवित्रता लाती है। शिक्षा के कारण ही मानव आज सभ्यता के इस उत्तुंग शिखर पर पहुँच पाया है। शिक्षा एक अनन्त प्यास है। जिसका सम्बन्ध केवल जीने की कला मात्र से नहीं है अपितु वह स्वयं जीवन के आदर्शों से जुड़ी हुयी है। न केवल व्यक्ति के सन्दर्भ में यह उपयोगी है, आवश्यक है, बल्कि राष्ट्र और समाज की उन्नति तथा विकास भी शिक्षा पर ही आधारित है। शिक्षा सामाजिक चेतना को जाग्रत करती है, सामाजिक धरोहर की रक्षा करती है, आगामी पीढ़ी को उसका हस्तान्तरण करती है एवं उसका विकास करती है। शिक्षा ही वैयक्तिकता की केंचुली से बाहर लाकर मानव को इस योग्य बनाती है कि वह समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण विश्व के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अपना सके और अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन भली प्रकार से कर सके।

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एडम्स ने अनुशासन के निम्नलिखित तीन रूप बताए हैं, जो विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं पर आधारित हैं –

1. दमनात्मक अनुशासन (Repressionistic Discipline)
2. प्रभावात्मक अनुशासन (Impressionistic Discipline)
3. मुक्त्यात्मक अनुशासन (Emancipationistic Discipline)

दमनात्मक अनुशासन के अन्तर्गत दण्ड के भय से बालक/बालिकाओं में अनुशासन पैदा किया जाता है। इस विचार धारा के अनुसार बालक को दबाकर बलपूर्वक नियंत्रण में रखा जाना चाहिए। उसे किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिए। इस विचारधारा का मूल सिद्धान्त है – 'यदि बच्चे से डण्डा अलग कर दिया जाए तो वह बिगड़ जाता है' (Spare the rod and spoil the child) जिन परिवारों में ऐसा होता है, उनके बच्चे दब्बू और अन्तर्मुखी हो जाते हैं। इस एकाधिकारात्मक व्यवहार से बालक के मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

प्रभावात्मक अनुशासन के अन्तर्गत शिक्षक द्वारा अपने व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के प्रभाव से बालक/बालिकाओं को अनुशासन की ओर उन्मुख किया जाता है। इस विचारधारा के अनुसार उनमें श्रद्धा और विनय की भावना पैदा करके अनुशासन पैदा किया जाता है। इसके अन्तर्गत शिक्षक की भूमिका बहुत बढ़ जाती है और कभी–कभी इसके भयंकर दुष्परिणाम देखने को मिलते हैं, क्योंकि आजकल आए दिन समाचार–पत्रों में शिक्षकों की निरंकुशता और दुश्चरित्रता के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं।

मुक्त्यात्मक अनुशासन के अन्तर्गत बालक को पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। इस विचार धारा के अनुसार यह स्वीकार किया गया है कि यदि बालक के ऊपर कोई नियंत्रण न हो और उनको उनके स्वाभाविक विकास के अवसर दिए जाएँ तो वे स्वयं अपने अंदर आत्मानुशासन की भावना पैदा कर लेंगे। आजकल इसी विचारधारा को मान्यता प्राप्त है किन्तु प्रायः देखा गया है कि अति स्वतंत्रता से बच्चे उद्दण्डी स्वेच्छाचारी एवं निरंकुश हो जाते हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि बालक/बालिकाओं में इन तीनों रूपों का अतिरेक हानिकारक सिद्ध हो सकता है। अतः हमें एक सन्तुलित अनुशासन की आवश्यकता है। जिससे उनके व्यक्तित्व विकास के सभी द्वार खुल सकें और उनका

भावी जीवन प्रभावशाली बन सके।

अध्ययन के उद्देश्य – किसी भी कार्य को सफल बनाने के लिए उसके उद्देश्यों को ध्यान में रखना परम आवश्यक है। यदि किसी भी कार्य का कोई उद्देश्य या लक्ष्य न हो तो वह कार्य बिना पतवार के नौका चलाने के समान होता है, जिसे पता ही नहीं उसे कहाँ जाना है वह तो समुद्र की लहरों के थपेड़ों में अथवा भँवर में फँसकर दिशाहीन अथवा नष्ट–भ्रष्ट ही होगी और वह कभी भी किनारे तक नहीं पहुँच पाएगी। इसलिए शोध–कार्य को सफल बनाने के लिए उद्देश्यों का निर्धारण करना अति आवश्यक है, अन्यथा शोधार्थी अंधेरे में भटक कर रह जाएगा। उद्देश्य शोधार्थी को सम्बन्धित समस्याओं की आवश्यकता बताने, उससे सम्बन्धित परिकल्पनाएं बनाने तथा उन्हें पूरा करने के लिए विचार, सिद्धान्त तथा निर्णय की सूझबूझ पैदा करता है एवं साथ–साथ यह जानकारी भी देता है कि उन उद्देश्यों का बालक–बालिकाओं के भावी जीवन पर क्या प्रभाव पड़ने वाला है। प्रत्येक अध्ययन के लिए न्यादर्श के चुनाव से लेकर परिणाम निष्कर्ष निकालने तक की समस्त प्रक्रिया का आधार उस अनुसंधान कार्य के निर्धारित उद्देश्य ही होते हैं। प्रत्येक शोधकर्ता का उद्देश्य उपलब्ध सामग्री के विश्लेषण द्वारा कुछ सामान्य निष्कर्ष निकालकर ज्ञान को आगे बढ़ाना होता है, फिर भी शोधार्थी का दायित्व है कि वह देशकाल एवं परिस्थितियों की सीमाओं को लांघकर शत–प्रतिशत शुद्ध निष्कर्ष निकाले।

वस्तुतः उद्देश्य ही अन्तिम लक्ष्य को निर्धारित करते हैं, जिसकी ओर किया गया कार्य अग्रसर होता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1. छात्राओं के भावी–जीवन पर पारिवारिक अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. छात्राओं के भावी जीवन पर पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के भावी–जीवन पर पारिवारिक अनुशासन के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के भावी जीवन पर पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन उस नींव को बनाता है, जिसके आधार पर भविष्य में शोध कार्य किया जाता है। किसी विषय के विकास में शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोध से भली–भाँति अवगत होना आवश्यक है। इससे शोधकर्ता को प्रस्तुत अध्ययन के गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण हेतु दिशा संकेत प्राप्त होता है। वस्तुतः वर्तमान एवं भावी अनुसंधान एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हैं। पूर्व संचित ज्ञान एवं पूर्व में हुए अनुसंधान की पृष्ठभूमि में नए अनुसंधानों की समस्याएँ एवं आवश्यकताएं जन्म लेती हैं। हर क्षेत्र और हर प्रकार के अनुसंधान में पुनरावलोकन का कार्य किया जाना आवश्यक होता है, जिसके बिना अनुसंधान सम्भव ही नहीं होता। पुनरावलोकन से यह ज्ञात होता है कि प्रस्तावित समस्या के किन–किन पहलुओं से सम्बन्धित किस प्रकार का ज्ञान पहले से ही उपलब्ध है तथा उसे किस दिशा में कार्य करने की जरूरत है। अनुसंधान विशेषज्ञ इस बात को स्वीकारते हैं कि अनुसंधान प्रक्रिया की सबसे पहली सीढ़ी सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं उनकी समीक्षा है (भटनागर, 1997)।

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के सम्बन्ध में वान डालिन (1966) का विचार है कि सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधकर्ता को नवीन ज्ञान के शिखरों तक ले जाता है, जहां उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्षों एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है। उसे यह भी ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ कमी है, कहाँ निष्कर्ष विशेष है और कहाँ अनुसंधान की पुनः आवश्यकता है। जब वह दूसरे शोधकर्ताओं के अनुसंधान कार्य की जांच एवं मूल्यांकन करता है तो बहुत सी अनुसंधान विधियों, बहुत से तथ्यों, सिद्धान्तों, संकल्पनाओं एवं संदर्भ ग्रन्थों का उसे ज्ञान हो जाता है, जो उसके अपने अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध होते हैं।

साहित्य पुनरावलोकन के सम्बन्ध में ग्रामस एडीसन ने लिखा है कि ''जब मैं कुछ चीजों का अन्वेषण करना चाहता हूँ तो मैं भूतकाल में सम्पादित किए गए प्रत्येक कार्यों का रसास्वादन करता हूँ और मैं देखता हूँ कि भूत में जो सम्पादित किया गया है बहुत ही परिश्रम तथा व्यय करके पूरा किया गया है। मैं अनुसंधान करते समय हजारों प्रयोगों के प्रदत्तों को संग्रहीत करता हूँ।''

क्लाइड – क्लूकहोन, के अनुसार – ''जब तक उपलब्ध सामग्री स्त्रोतों के अधिकांश अंश संग्रहीत तथा संश्लेषित न किए जाएँ तब तक क्षेत्रीय अनुसंधान सामग्री के दृष्टिकोण से अपूर्ण रहेगा, क्योंकि उचित प्रतिनिधित्व के छूट जाने का भय रहता हैं।''

यंग के अनुसार सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन करने में निम्न तथ्यों का ज्ञान होता है –

1. अध्ययन विषय के सम्बन्ध में एकीकरण की अनुभूति तथा आवश्यक सामान्य उन्मेशीकरण की अन्तर्सूझ की दृष्टि।
2. अध्ययन में उपयोगी सिद्ध होने वाली पद्धतियों के प्रयोग के सम्बंध में।
3. प्रमाणात्मक चिन्तन तथा अन्तरिम व प्रारम्भिक मान्यताओं के परीक्षण में सहयोग।
4. अनावश्यक दोहराने की गलती से बचने तथा निराशाजनक फलदायक विचारों की स्थिति से दूर रहने में सहायता मिल सकती है।

अस्तु, हम यहाँ सम्बन्धित शोध–अध्ययनों को प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे। वर्तमान शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य– ''उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं की पारिवारिक, वातावरण एवं अनुशासन का उनके भावी–जीवन पर प्रभाव का एक अध्ययन है, इस सम्बन्ध में निम्न शोध दृष्टव्य हैं–

पूजा वर्मा और गायत्री राइना (2016) – इस शोध में शिमला के प्राइवेट स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों की गुणवत्ता के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया। शोधकर्त्रियों ने इस विषय का चुनाव इसलिए किया, क्यों कि बालक के स्वभाव पर पारिवारिक सम्बन्धों का प्रभाव पड़ता है। यदि बालक का समाजीकरण अच्छा हुआ है, मूल्य अच्छे हैं, तो हम समझते हैं कि परिवार में भी उसको अच्छा पारिवारिक वातावरण मिला होगा, इस कारण बालक समाज में सबके साथ समायोजन कर पाता है और उसका भावी जीवन भी निश्चित रूप से सुखद ही होगा। इस प्रकार उनके शोध का मुख्य उद्देश्य था–शिमला के प्राइवेट स्कूल के लड़के तथा लड़कियों के पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन करना। प्रतिदर्श के लिए शिमला कस्बे के प्राइवेट विद्यालयों के 14–16 वर्ष के विद्यार्थियों 50 लड़के तथा 50 लड़कियों को मिलाकर 100 किशोरों को चुना गया। बच्चों के पारिवारिक सम्बन्धों को जाँचने के लिए नलनी राव (1989) द्वारा बना पेरेन्ट्स–चाइल्ड रिलेशन स्केल का प्रयोग किया गया। आंकड़ों को एकत्रित करके उनका विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' परीक्षणों का प्रयोग किया गया। शोध के मुख्य परिणाम थे– लड़कियाँ, लड़कों की तुलना में अपने पिता के अधिक नज़दीक हैं तथा पिता उन्हें अपेक्षाकृत अधिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। लड़कियाँ भी अपेक्षाकृत लड़कों के अपने पिता को अधिक आदर्श समझती हैं

गुप्ता मधु और रानी सुरेखा (2015) – इस शोध में माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का अध्ययन किया गया। इन्होंने न्यादर्श के रूप में रोहतक शहर के प्राइवेट स्कूल के 200 छात्रों को लिया। यादृच्छिक न्यादर्श तकनीकी का प्रयोग किया गया। के.एस. मिश्रा द्वारा रचित, घर–वातावरणीय परिसूची का प्रयोग करके विद्यार्थियों के घर के वातावरण को जाना गया। घर–वातावरण के विभिन्न आयामों, जैसे नियंत्रण, संरक्षण, अनुकूलन, दण्ड, सामाजिक प्रथकता, स्वीकृति, अस्वीकृति तथा विशेषाधिकार प्राप्त कर माध्यमिक स्कूल के छात्रों पर प्रभाव देखना शोध का मुख्य उद्देश्य था। निष्कर्ष में पाया गया कि घर–वातावरण के तीन आयाम, जैसे–नियंत्रण, ईनाम तथा स्वीकृति का छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है तथा शेष सात आयाम, जैसे– संरक्षण, सामाजिक प्रथकता, अस्वीकृति, दण्ड आदि का छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

खातून आलिया (2014) – शोधकर्त्री ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण तथा गणित में उपलब्धि पर अध्ययन किया। इन्होंने बताया कि बालक का पारिवारिक वातावरण उनके जीवन में अहम भूमिका निभाता है। यदि बालक को सकारात्मक पारिवारिक वातावरण मिलता है तो बालक की शैक्षणिक उपलब्धि अधिक होती है। इस प्रकार उनके शोध के मुख्य उद्देश्य थे – सकारात्मक पारिवारिक वातावरण रखने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों तथा औसत पारिवारिक वातावरण रखने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि की तुलना करना, सकारात्मक पारिवारिक वातावरण तथा नकारात्मक पारिवारिक वातावरण रखने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि की तुलना तथा औसत और नकारात्मक पारिवारिक वातावरण रखने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि की तुलना करना। न्यादर्श के लिए उत्तर प्रदेश राज्य के अलीगढ़ शहर के माध्यमिक स्कूलों से 200 विद्यार्थियों (100 लड़के तथा 100 लड़कियाँ) को लिया गया तथा विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करने के लिए बीना शाह द्वारा बना पारिवारिक वातावरण मापनी का प्रयोग किया तथा गणित में उपलब्धि को जानने के लिए 9वीं कक्षा के अंकों का प्रयोग किया। 'टी' परीक्षण, मानक विचलन, मध्यमान व सांख्यिकी तकनीकों का प्रयोग किया गया। शोध के निष्कर्ष इस प्रकार हैं – सकारात्मक, नकारात्मक तथा औसत पारिवारिक वातावरण रखने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की गणित उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया, लड़के, लड़कियों की तुलना में गणित उपलब्धि में अच्छे हैं, सकारात्मक पारिवारिक वातावरण वाले लड़के, सकारात्मक पारिवारिक वातावरण रखने वाली लड़कियों से गणित उपलब्धि में अधिक अच्छे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करता है।

भांडोरिया दीप्ति और भांडोरिया स्वाति (2013) – शोधकर्त्रियों ने न्यादर्श के लिए उत्तर प्रदेश के झांसी जिले के विभिन्न स्कूलों से 9वीं तथा 10वीं के 50 पुरूष विद्यार्थी तथा 50 महिला विद्यार्थियों को लिया। वे सभी 13 से 15 वर्ष के बीच थे। इस आयु वर्ग के बच्चे इसलिए चुने, क्योंकि यह उम्र तनाव तथा तूफाने से घिरी होती है। **करूणा शंकर मिश्र (1984)** द्वारा रचित विद्यालयी वातावरण परिसूचि तथा **रूडोय एस. मोस (1986)** द्वारा रचित पारिवारिक वातावरण मापनी का प्रयोग छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव देखने के लिए किया। शोधकर्त्रियों के अध्ययन के उद्देश्य थे – छात्र/छात्राओं के घर वातावरण तथा स्कूल वातावरण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा और शैक्षणिक चिन्ता पर प्रभाव देखना। परिणाम में पाया गया कि शैक्षणिक चिन्ता का अभिप्रेरणा पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु शैक्षणिक चिन्ता का शैक्षणिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

पाठक मीनाक्षी और वाजपेयी प्रमोद (2012) – शोधकर्त्ताओं ने पारिवारिक वातावरण का स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के भविष्य वक्ता के रूप में अध्ययन किया। लड़के और लड़कियों के पारिवारिक वातावरण तथा उपलब्धि अभिप्रेरणा के संबंधों को जानना तथा पारिवारिक वातावरण किस प्रकार लड़के और लड़कियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा भविष्यवक्ता के रूप में भागीदारी निभाती है, यह छानबीन करना शोध के मुख्य उद्देश्य थे। प्रतिदर्श के रूप में लखनऊ विश्वविद्यालय के 208 छात्रों को चुना गया। इनमें कला, वाणिज्य तथा विज्ञान संकायों के 86 लड़के एवं 122 लड़कियों का यादृच्छिक सांख्यिकी तकनीक द्वारा लिया गया। इन आंकड़ों पर 1993 में बना हरप्रीत भाटिया तथा एन.के चांदा द्वारा बनी (FES) पारिवारिक वातावरण मापनी का प्रयोग किया तथा 1984 में टी.आर. शर्मा द्वारा बनी शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण (AAMT) का प्रयोग किया। शोध का यह निष्कर्ष निकला कि संघर्ष, एकजुटता और केयरिंग रिलेशनशिप आयाम तथा पारिवारिक वातावरण का संगठित क्षेत्र शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर सकारात्मक सहसंबंध प्रदर्शित करता है जबकि स्वतंत्रता, व्यक्तिगत वृद्धि और नियंत्रण पारिवारिक वातावरण के आयाम शैक्षणिक उपलब्धि अभिप्रेरणा पर कोई भागीदारी नहीं दिखाते।

जादहव एन.एस. (2011) – शोधकर्ता ने कॉलेज स्तर के विद्यार्थियों के घर वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्ता में सहसम्बन्ध का अध्ययन किया। लड़के

और लड़कियों के घर वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता के बीच सह सम्बन्ध की छानबीन करना, ग्रामीण और शहरी तथा सरकारी और गैर–सरकारी कॉलेजों के छात्रों के घर वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता के सहसम्बन्धों का विश्लेषण करना तथा अधिक सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा कम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले बच्चों के घर वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता के सहसम्बन्धों की परख करना शोध के मुख्य उद्देश्य थे। न्यादर्श के लिए कर्नाटक राज्य के बेल्गयूम जिले से कॉलेज के 200 विद्यार्थियों को लिया गया तथा प्रत्येक कॉलेज से यादृच्छिक विधि द्वारा विद्यार्थियों का चुनाव किया गया। उन पर डॉ. बीना शाह द्वारा बना (1990) पारिवारिक वातावरण मापनी (FCS) तथा महेश भार्गव (1999) द्वारा बना संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग करके आंकड़े एकत्रित किए, जिनका परिणाम यह निकला कि लड़के और लड़कियों के घर वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता में सकारात्मक सह सम्बन्ध पाया गया। इससे यह पता चला कि घर वातावरण का परिणाम तथा संवेगात्मक परिपक्वता का परिणाम आपस में सम्बन्धित थे। इस कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। सरकारी कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों के घर वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सकारात्मक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया, बल्कि गैर–सरकारी कॉलेजों के छात्रों में सकारात्मक सह सम्बन्ध पाया गया। अधिक सामाजिक–आर्थिक स्तर रखने वाले छात्रों के घर वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता में सकारात्मक सह सम्बन्ध नहीं पाया गया, बल्कि कम सामाजिक–आर्थिक स्तर रखने वाले छात्रों के घर वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक सह सम्बन्ध पाया गया।

पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन – पूरे घर का वातावरण, जिसमें दादा–दादी, माता–पिता, भाई–बहन और यदि संयुक्त परिवार है तो, ताऊ–ताई, चाचा–चाची और उनके बच्चे आदि पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत आते हैं। उन सबके बीच का परस्पर सम्बन्ध – तनावपूर्ण अथवा सौहार्द्रपूर्ण एवं आचरण भी इसमें समाहित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में गृह पर्यावरण के अन्तर्गत 10 विमाओं का अध्ययन किया जाएगा, जैसे–नियंत्रण अथवा अनुशासन, सुरक्षा, दण्ड, अनुरूपता, अलगाव, पुरस्कार, विशेषाधिकार से वंचन, प्रोत्साहन, उपेक्षा एवं अनुमति।

उच्च प्राथमिक विद्यालय – उच्च प्राथमिक विद्यालय के अन्तर्गत कक्षा 6 से 8 तक की छात्राओं से है।

भावी जीवन पर प्रभाव – शिक्षा के माध्यम से अभिभावक अपने बच्चों के भावी–जीवन को ही सुधारने का प्रयास करते हैं। एक अच्छा शिक्षार्थी ही अपना, अपने परिवार का, अपने राष्ट्र एवं सम्पूर्ण विश्व का कल्याण कर सकता है। बालक/बालिकाओं के सुखद भविष्य की नींव उसके पारिवारिक वातावरण तथा अनुशासन पर ही निर्भर करती है। संसार में कौन ऐसा व्यक्ति है जो अपने भविष्य के बारे में नहीं सोचता है? हमारे समाज का स्वरूप क्योंकि पितृ सत्तात्मक है अतः बालिकाओं का जीवन पुरूष पर ही निर्भर होता है – चाहे वह पिता के रूप में, भाई के रूप में, पति के रूप में अथवा बेटों के रूप में ही क्यों न हो, किन्तु बालिकाओं ने आज अपनी इन श्रृंखलाओं को तोड़ दिया है। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से हर कार्य क्षेत्र में अपना लोहा मनवाया है। अब वह अबला नहीं रहीं, पुरूष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर वह अपने कर्म क्षेत्र के पथ पर अग्रगामी हैं। उनकी उपलब्धियाँ असीमित हैं – वे नारी सशक्तिकरण का पर्याय हैं।

निष्कर्ष

शोधकर्त्री ने अपने विषय – ''उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं के पारिवारिक वातावरण एवं अनुशासन का उनके भावी–जीवन पर प्रभाव का अध्ययन'' को ध्यान में रखते हुए सभी शोधों का ध्यानपूर्वक अनुशीलन किया तथा उनके उद्देश्य, परिकल्पनाएँ एवं निष्कर्षों को जाना व समझा। शोधकर्त्री ने विचार किया कि उनके शोध से सम्बन्धित एक जैसा कुछ नहीं हुआ, परंतु फिर भी इन सभी शोधों से शोधकर्त्री को शोध की प्रस्तावना, शोध के सुझाव, शोध की आवश्यकता और कार्य प्रणाली को आगे बढ़ाने में अत्यधिक सहायता मिली। शोधज्ञान उसे नए ज्ञान के उच्चतम सोपानों पर ले जाता है, जहाँ उसे अपने विषय से सम्बन्धित निष्कर्ष तथा परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त हुआ तथा उससे यह भी पता चलता है कि ज्ञान के किस क्षेत्र में रिक्त स्थान है, कहाँ पर विरोधाभास है, कहाँ फिर से शोध की पुनर्आवश्यकता है। वस्तुतः जब वह दूसरों के द्वारा किए गए अनुसंधानों का अनुशीलन करता है तो उसे बहुत सी अनुसंधान विधियाँ, सिद्धान्तों एवं ग्रन्थों का ज्ञान होता है, जो उसे अपने अनुसंधान में उपयोगी सिद्ध होते हैं। वह दूसरे शोधार्थी द्वारा की गयी त्रुटियों से भी बचने का प्रयास करता है।

सन्दर्भ सूची

1. पूजा वर्मा और गायत्री राइना (2016) : शिमला के प्राइवेट स्कूल के लड़के तथा लड़कियों के पारिवारिक सम्बन्धों का अध्ययन करना।
2. बंसल, आदित्य (2016) : कोरिलेशन बिटविन फैमिली इनवायरनमेण्ट एण्ड सेल्फ स्टीम ऑफ एडोलीसेन्ट्स, द इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डियन साइकोलॉजी, वॉल्यूम – 3, इश्यू – 4 नं. 68, पृ0 129–137।
3. गुप्ता मधु और रानी सुरेखा (2015) : रोहतक शहर के प्राइवेट माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण का अध्ययन।
4. खातून आलिया (2014) : माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण तथा गणित में उपलब्धि पर अध्ययन।
5. भांडोरिया दीप्ति और भांडोरिया स्वाति (2013) : छात्रों के घर वातावरण तथा स्कूल वातावरण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि, अभिप्रेरणा और शैक्षणिक चिन्ता पर प्रभाव।
6. पाठक मीनाक्षी और वाजपेयी प्रमोद (2012) : पारिवारिक वातावरण का स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के भविष्यवक्ता के रूप में अध्ययन।
7. जादहव एन.एस. (2011) : कर्नाटक राज्य के बेल्गयूम जिले के कॉलेज स्तर के विद्यार्थियों के घर वातावरण तथा संवेगात्मक परिपक्वता में सह सम्बन्ध का अध्ययन।
8. सैनी मोनिका (2010) : ए स्टडी ऑफ एकेडमी एचीवमेण्ट ऑफ शैड्यूल कास्ट्स सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू स्टडी हैबिट, होम इन्वायरनमेन्ट एण्ड स्कूल इन्वायरनमेन्ट, पी–एच.डी. थीसिस, महर्षि दयानन्द यूनीवर्सिटी, रोहतक।
9. पहाड़िया के.एल. (2006) : मादक पदार्थों का सेवन करने वाले तथा नहीं करने वाले परिवार के किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन तथा पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।
10. गुप्ता मधु (2005) : शैक्षिक उपलब्धि पर परिवार की प्रकृति पारिवारिक वातावरण एवं अभिभावकों की सहभागिता के प्रभाव का अध्ययन।
11. शर्मा मंजु (2003) : छात्रावास एवं परिवार में रहने वाली छात्राओं के पारिवारिक लगाव, समायोजन एवं अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन।
12. पाण्डे आर.के. (2000) : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रोजेक्ट के अन्तर्गत पूर्व किशोरावस्था की बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति पर घरेलु वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।
13. ग्रीन्स डी.एन. (1998) : स्टूडेन्ट फेलिएट एण्ड एडजस्टमेंट।
14. भट्ट सुधा (1991) : पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।